

सबके नाम संबोधन

यह Earthlings टीम का संबोधन है उन लोगों के नाम, जो अराजकता और हिंसा के बजाय व्यवस्था और सद्भाव चुनते हैं। यह परियोजना उनके लिए बनी है, जो सहमति बनाना और रचना करना चाहते हैं, शांति से और आगे बढ़ते हुए जीना चाहते हैं। लोग एक-दूसरे के शत्रु नहीं हैं; वे परस्पर एकजुट हो सकते हैं।

जिस दुनिया का सपना बहुत लोग देखते हैं, उसे लोगों को सचमुच बराबर अधिकार और बराबर स्वर देना चाहिए।

हमारा विश्वास है कि परिवर्तन टकराव के बिना भी आ सकता है। बुरे से लड़ने के बजाय हमने अच्छे को बढ़ावा देना चुना और दोषी ढूँढ़ना छोड़ दिया। जो हो रहा है, उसका दोषी कोई एक व्यक्ति नहीं है। एक नेता की जगह दूसरा आ जाने से सार रूप में कुछ नहीं बदलता। झूठ यह है कि हम सोचते हैं, हम बुरा जीवन जीते हैं क्योंकि बुरे लोग हैं। असल में मनुष्य का आचरण उन परिस्थितियों पर निर्भर करता है, जिनमें वह है। और ये परिस्थितियाँ उस समाज की बनावट से तय होती हैं, जो हम पर आचरण के नियम और निर्णय थोपता है।

जनों की ओर से राज्य बोलते हैं

संयुक्त राष्ट्र में जन अतिथि की तरह आने दिए जाते हैं: उन्हें सुना जाता है, उनसे परामर्श किया जाता है, पर मत उनके बिना पड़ते हैं।

संयुक्त राष्ट्र चार्टर इन शब्दों से आरंभ होता है: «हम, संयुक्त राष्ट्र के जन»। किंतु उसके अस्तित्व के सारे वर्षों में जनों का कहा हुआ कोई भी शब्द अपने आप कुछ तय नहीं कर सका। तय राज्य करते हैं, जन नहीं। और राज्य के हित तथा जन के हित उससे कहीं अधिक बार अलग होते हैं, जितना खुलकर कहने का चलन है।

निर्णय अलग-अलग कमरों में लिए जाते हैं, और उनके परिणाम करोड़ों लोगों पर पड़ते हैं। हम उन बिलों को चुकाते हैं जो हमारी सहमति के बिना बनाए गए। और राज्य अपने कामों को पूरा नहीं कर पा रहे - इसलिए नहीं कि वे बुरे हैं, बल्कि इसलिए कि रचनात्मक नागरिक समाज के बिना यह काम पूरी तरह किया ही नहीं जा सकता। राज्यों को एक समकक्ष पक्ष चाहिए, जो आज है ही नहीं।

हर विद्यमान जन राज्यों से नागरिकता के रास्ते और निवास के राज्यक्षेत्र के रास्ते जुड़ा हुआ है। स्वतंत्र स्वर किसी भी जन के पास नहीं है।

जो निर्णय लेते हैं, उन्हें कौन जाँचता है

विधिक व्यवस्थाओं में भूल और सत्ता के दुरुपयोग से बचाव बहुत पहले सोचा जा चुका है - नियंत्रण और संतुलन। काम सही ढंग से रखा गया है, पर बनावट ठीक से काम नहीं करती। नियंत्रण को खरीदा जा सकता है, संतुलन को डराया जा सकता है, और यह अपवाद के मामलों में नहीं, लगातार होता है। सारे नियंत्रण और संतुलन उसी राज्य-व्यवस्था के भीतर हैं, जिसे उन्हें जाँचना है। वही राज्य-व्यवस्था उन्हें बनाती है, नियुक्त करती है और पालती है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तो यह भी नहीं है।

संयुक्त राष्ट्र चार्टर महासचिव को हटाने की एक भी प्रक्रिया नहीं जानता - वह है ही नहीं। संयुक्त राष्ट्र की निगरानी सेवाएँ स्वयं संयुक्त राष्ट्र के अधीन हैं। उस पर मुक्रदमा भी नहीं चल सकता: अंतरराष्ट्रीय न्यायालय में पक्ष केवल राज्य हो सकते हैं।

विश्व समुदाय इस बात का भरोसा कैसे करे कि महासचिव किसी राज्य द्वारा खरीदा या डराया हुआ नहीं है? किसी तरह नहीं। जाँचने का उपाय है ही नहीं।

सच्ची जाँच केवल वहाँ से संभव है, जहाँ न बजट पहुँचता है, न नियुक्ति, न अनुमति। ऐसी जगह आज है नहीं। हम उसे बना रहे हैं।

एक नया जन

हमारी पहल एक ऐसा जन रचने की है, जो राज्यक्षेत्र से बँधा न हो। उन सबके लिए, जो नए प्रकार का समाज बनाने में भाग लेने को तैयार हैं।

यह पहला जन होगा, जो किसी राज्य में शामिल नहीं है और किसी राज्यक्षेत्र का दावा नहीं करता। ऐसा जन, जो अपना भाग्य स्वयं तय करता है और अपनी इच्छा स्वयं व्यक्त करता है। जिसमें लोग साझे मूल्य रखते हैं और साझी संबद्धता को स्वीकार करते हैं। ऐसा जन, जिसमें अपने सोचे-समझे चयन से प्रवेश किया जा सकता है। ऐसा जन, जिससे किसी भी समय, कारण बताए बिना, निकला जा सकता है। जिसमें कोई दूसरों पर सत्ता जमा नहीं कर सकता, और जो प्रतिस्पर्धा पर नहीं, सहयोग पर टिका है। और इसके साथ ही व्यक्ति अपने देश का नागरिक बना रहेगा, अपनी राष्ट्रीयता, धर्म और संस्कृति बनाए रखेगा, पर उसे वह मिलेगा जो उसके पास कभी नहीं था - नए प्रकार का समाज।

इस जन को हमने Earthlings कहा, क्योंकि हम सब उस ग्रह से जुड़े हैं जिस पर हम रहते हैं।

एक प्रश्न उठता है: ऐसा जन आखिर बनाया ही क्यों जा सकता है?

क्योंकि लोग किसी से अनुमति माँगे बिना जन के रूप में एकत्र हो सकते हैं। ऐसे जन के रूप में, जो न राज्यक्षेत्र से बँधा है, न राज्य से, न उत्पत्ति से, न भाषा या संस्कृति से। इस प्रश्न को अधिक पूरी तरह समझने के लिए «विधिक आधार», «नागरिक स्वर», «विधिक व्यक्ति कैसे उत्पन्न होता है» और «आपत्तियाँ और उत्तर» दस्तावेज़ पढ़िए।

अंतरराष्ट्रीय विधि आत्मनिर्णय के अधिकार का धारक जन को ही मानती है - अपना विकास स्वयं तय करने और अपने नाम से बोलने के अधिकार का। न राष्ट्र, न नृजातीय समूह, न जनसंख्या इस अधिकार से युक्त हैं।

जन की स्थापना लोग राजकीय पंजीकरण के बिना कर सकते हैं। किसी भी सामाजिक आंदोलन या संगम के लिए ऐसा पंजीकरण अनिवार्य है, और उन्हें बाहरी निर्णय से बंद किया जा सकता है। जन को बंद नहीं किया जा सकता, वह तब तक है जब तक उसके लोग हैं। उसके होने के लिए लोगों की अपनी स्वीकृति के सिवा किसी की स्वीकृति नहीं चाहिए।

अभी ही क्यों

जन की स्थापना केवल तभी हो सकती है, जब यह ज्ञात हो कि उसमें कौन है, और जब मत ईमानदारी से गिने जा सकें। जब तक लोग एक-दूसरे से दूर रहते थे और एक-दूसरे को जाँच नहीं सकते थे, तब तक न यह होता था, न वह। प्रतिभागियों की कोई भी सूची गढ़े हुए नामों से भरी जा सकती थी, और एक ही व्यक्ति उसमें कई बार दर्ज हो सकता था। मतदान का परिणाम जाँचना भी संभव नहीं था।

आज यह हल हो चुका है। व्यक्ति यह पुष्टि करता है कि वह जीवित है और एक ही है, यह बताए बिना कि वह कौन है। मत केवल उसका है: उसे न खरीदा जा सकता है, न जमा किया जा सकता है। किसी भी मतदान का क्रम और परिणाम खुले हैं - हर कोई उनकी पुष्टि स्वयं कर सकता है, किसी की बात पर भरोसा किए बिना। जन की सारी गतिविधि भी जाँच के लिए खुली है।

इसीलिए ऐसा जन न सौ साल पहले उत्पन्न हो सकता था, न बीस साल पहले।

बाहरी अंकुश

सत्ता पर नज़र रखने वाले बहुत हैं: प्रेस, अधिकार-रक्षक, चुनाव पर्यवेक्षक। वे ज़रूरी काम करते हैं, और उन सबकी एक साझी कमज़ोरी है। उनका वित्तपोषण छीना जा सकता है, मान्यता वापस ली जा सकती है, पंजीकरण से मना किया जा सकता है, उन्हें देश से निकाला जा सकता है। जिस जाँचने वाले को बंद किया जा सके, वह भरोसेमंद अंकुश नहीं है।

Earthlings जन को बंद नहीं किया जा सकता। वह किसी देश में पंजीकृत नहीं है, किसी बजट से पैसा नहीं लेता, उसका कोई कार्यालय नहीं जिसे बंद किया जा सके, और कोई अनुमति नहीं जिसे वापस लिया जा सके। पहली बार जाँच इस तरह होती है कि जिसकी जाँच हो रही है, वह जाँचने वाले पर न प्रभाव डाल सकता है, न उसे अपने वश में कर सकता है।

उत्तरदायी ठहराना हम न कर सकते हैं, न करेंगे: ऐसा अधिदेश हमारे पास नहीं है। बाहरी अंकुश की ताक़त इसमें है कि वह उसे दिखाई देने लायक बना देता है, जिसे छिपाने की कोशिश होती है। लेखा-परीक्षक इसी तरह काम करते हैं, और चुनाव पर्यवेक्षक भी। हम कहे हुए को किए हुए के सामने रख सकते हैं और अंतर के बारे में इस तरह कह सकते हैं कि वह सबके लिए स्पष्ट हो जाए।

यह सत्ता से लड़ाई नहीं है। लेखा-परीक्षक बैंक से नहीं लड़ता, पर्यवेक्षक निर्वाचन आयोग से नहीं लड़ता। बाहरी निगरानी की ज़रूरत स्वयं सत्ता को है: जब उसके अपने जाँचने वाले उसी के बजट पर बैठे हों, तब यही एक उपाय है यह सिद्ध करने का कि वह साफ़ है।

हमें कौन जाँचेगा

जो प्रश्न हमने संयुक्त राष्ट्र के बारे में रखा, वही हम अपने बारे में रखने को बाध्य हैं।

Earthlings जन में मत को न खरीदा जा सकता है, न जमा किया जा सकता है, न छीना जा सकता है। प्रतिभागियों का रजिस्टर किसी एक संचालक के नियंत्रण में नहीं है। हर निर्णय की जाँच कोई भी व्यक्ति कर सकता है। और वे पाँच सिद्धांत, जो व्यक्ति को स्वयं जन की सत्ता से बचाते हैं, न बहुमत से, न Earthlings चार्टर से, न व्याख्या से रद्द किए जा सकते हैं।

इस प्रश्न का उत्तर हम देते हैं। संयुक्त राष्ट्र के पास उत्तर नहीं है।

कहाँ से शुरू करें

स्वतंत्र और विचारशील लोग मिलकर दूसरी नागरिक व्यवस्था बना सकते हैं, जो पहले से मौजूद व्यवस्था के साथ शांतिपूर्वक रह सकेगी। तब हर व्यक्ति के पास यह चयन होगा कि वह जीने के लिए कौन-सा समाज चुनता है। जो जन व्यवहार में अपनी सक्षमता सिद्ध कर देगा, उसके पास अंतरराष्ट्रीय विधि का पूर्ण विषय बनने के सारे आधार होंगे।

इस साइट पर वे दस्तावेज़ प्रकाशित हैं जो बताते हैं कि यह किसलिए चाहिए, कैसे बना है, विधिक रूप से किस पर टिका है, और हर व्यक्ति को तथा हमारे बाद आने वालों को क्या देता है।

Earthlings घोषणा से परिचय करके शुरू कीजिए।

Earthlings टीम